शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

दुर्गावती देवीः भारत की प्रमुख महिला क्रांतिकारी

प्राप्तिः 12.11.2021
स्वीकृतः 27.12.2021

डॉ० भूकन सिंह
एसोसिऐट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
एस०डी० (पी०जी०) कॉलेज
गाजियाबाद
ईमेलः drbhukansingh@gmail.com

सारांश

भारत को एक लम्बे संघर्ष के बाद आजादी मिली, इस आजादी को दिलाने में महिलाओं ने भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई लेकिन इसमें अनेक महिलाएँ ऐसी भी हैं, जिनको इतिहास में वो स्थान प्राप्त नहीं हुआ जो कि उन्हें मिलना चाहिए था। दुर्गावती देवी भी एक ऐसा ही नाम है, उन्होंने क्रांतिकारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जान की परवाह किये बिना आजादी की लड़ाई में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हमारा स्वाधीनता आंदोलन वास्तव में जन आंदोलन था। मातृभूमि की पुकार पर गाँवों–शहरों से हजारों लोग उसे विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिए निकल पड़े थे। इतिहास के पन्नों में ऐसे असंख्य वीर और वीरांगनाएँ हैं, जिन्होंने अपने समर्पण, साहस एवं त्याग से भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन्हीं में से एक दुर्गावती देवी थी, जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

दुर्गावती देवी का जन्म 7 अक्टूबर 1907 को उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी जिले के शहजाहपुर गाँव में हुआ था। 10 वर्ष की आयु में इनका विवाह लाहौर के शिवचरण जी के पुत्र भगवती चरण बोहरा के साथ हो गया। भगवती चरण वोहरा का मन प्रारम्भ से ही देश के लिये कुछ करने का था। लाहौर नेशनल कॉलेज में शिक्षा के दौरान भगवती चरण वोहरा ने छात्रों की एक अध्ययन मण्डली का गठन किया था, इसमें राष्ट्र की परतंत्रता और मुक्ति से सम्बन्धित प्रश्नों पर परिचर्चा होती थी जिसमें भगत सिंह एवं सुखदेव नियमित रूप से शामिल होते थे। इनकी विचारधारा का भगवती चरण वोहरा के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। 1920 में अपने पिता के देहांत के उपरांत भगवती चरण वोहरा खुलकर क्रांतिकारियों के साथ हो गये। अब उनके घर पर क्रांतिकारियों का जमावड़ा लगा रहता था। दुर्गा देवी सभी का आदर करती, स्नेहपूर्वक उनका सेवा सत्कार करती इसलिए सभी क्रांतिकारी उन्हें 'दुर्गा भाभी' कहने लगे और फिर उनका यही नाम सबके बीच में प्रसिद्ध हो गया।

दुर्गा देवी के पति भगवती चरण वोहरा, चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह द्वारा स्थापित क्रांतिकारी संगठन **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन'** के सक्रिय थे। अपने पति से प्रभावित होकर दुर्गावती भी इस संगठन की सदस्य बन गयी। दुर्गावती इस संगठन में सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने और हथियार एवं बम के सामान को लाने का कार्य करती थी। महिला होने के कारण पुलिस भी इनकी गतिविधियों पर कोई शक नहीं करती थी। 1920 के दशक

के अन्त तक हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन के सदस्यों ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को काफी बढ़ा दिया था और अब दुर्गावती भी इस संस्था की महत्वपूर्ण सलाहकार एवं अभिन्न अंग बन गई।

सन् 1928 में लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये एक मीटिंग लाहौर में बुलायी गयी जिसकी अध्यक्षता दुर्गावती देवी ने की।

मार्च 1926 में भगवती चरण वोहरा व भगत सिंह ने संयुक्त रूप से **'नौजवान भारत सभा'** का प्रारूप तैयार किया और रामचंद्र कपूर के साथ मिलकर इसकी स्थापना की। सैकड़ों नौजवानों ने इस संस्था का सदस्य बनकर देश को स्वतंत्र कराने के लिये अपने प्राणों की आहुति देने की शपथ ली।

19 दिसम्बर 1928 में भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव ने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिये उनकी हत्या के लिये जिम्मेदार पुलिस अधिकारी जॉन सैंडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी। उस समय भगवती चरण वोहरा कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने के लिये कलकत्ता में थे। पुलिस से बचने के लिये तीनों क्रांतिकारियों ने दुर्गावती के घर जाकर शरण ली। पुलिस लगातार इनके पीछे पड़ी हुई थी इसलिये इन्होंने तुरन्त लाहौर छोड़ने का निर्णय लिया और दुर्गा भाभी ने इनका पूरा साथ दिया एवं किसी को कोई संदेह न हो इसके लिये ये एक परिवार के रूप में कलकत्ता मेल में चढ़ गये। भगत सिंह ने एक संभ्रान्त पुरूश का वेश धारण किया। दुर्गावती देवी उनकी पत्नी बन गई तथा दुर्गावती का पुत्र उन दोनों का पुत्र बन गया तथा राजगुरू व सुखदेव परिवार के सेवक बन गये। इस तरह दुर्गावती अंग्रेजों की नाक के नीचे से भगत सिंह को लाहौर से निकालकर कलकत्ता ले गयी। भगवती चरण वोहरा को जब अपनी पत्नी के साहस के विषय में पता चला तो उनको अत्यधिक प्रसन्नता हुई और उन्होंने कहा कि मैं अब तक तुम्हें पहचान नहीं पाया, लेकिन आज मुझे पता चल गया कि मुझे एक क्रांतिकारी पत्नी मिली हैं। कुछ समय पति के साथ रहकर दुर्गावती लाहौर वापस आ गयी।

इसके पश्चात् भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। ऐसा करने का उनका मुख्य उद्देश्य था कि अंग्रेजों को पता चलना चाहिये कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में उनकी नीतियों के प्रति आक्रोश है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद नहीं था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। भगत सिंह और उनके साथी चाहते तो वहाँ से भाग सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया। इसके कुछ देर बाद पुलिस आ गयी और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। भगत सिंह की गिरफ्तारी के पश्चात् भगवती चरण वोहरा ने उन्हें लाहौर जेल से भगाने के लिये बम धमाके की योजना बनाई। दुर्भाग्य से रावी नदी के तट पर 28 मई 1930 को बम का परीक्षण करते वक्त भगवती चरण वोहरा की मृत्यु हो गयी लेकिन अपने पति की मृत्यु के पश्चात् दुर्गावती देवी ने क्रांतिकारी गतिविधियों को और तेज कर दिया। जुलाई 1930 में उन्होंने भगत सिंह की तस्वीर के साथ लाहौर में एक विशाल जुलूस का नेतष्त्व किया और उनकी रिहाई की मांग की। इसके कुछ हफ्ते बाद ही 63 दिनों तक जेल में भूख हड़ताल करने वाले जतीन्द्रनाथ दास की जेल में ही मृत्यु हो गई। दुर्गा देवी ने ही लाहौर में जाकर उनका अंतिम संस्कार करवाया। उसी वर्ष 8 अक्टूबर 1930 को उन्होंने दक्षिण बंबई में भगत सिंह एवं उनके साथियों को

फांसी की सजा सुनाने वाले गवर्नर हेली से बदला लेने के लिये 9 अक्टूबर 1930 को दुर्गावती देवी ने गवर्नर पर गोली चला दी, जिसमें हेली तो बच गये लेकिन अंग्रेज अधिकारी टेलर घायल हो गये जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेज पुलिस इनके पीछे लग गयी। इन्हें व इनके साथी यशपाल को बंबई के एक फ्लैट से पकड़कर बंदी बना लिया गया और इनको तीन साल की सजा सुनाई गयी। इसी बीच 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू को फांसी दे दी गयी।

दुर्गा देवी के ऊपर कोई आरोप सिद्ध न हो सका। अतः कुछ महीनों बाद इनको रिहा कर दिया गया। अपने सभी साथियों के शहीद हो जाने के बाद दुर्गा भाभी एकदम अकेली पड़ गयी। इसके पश्चात् वह अपने पाँच वर्षीय पुत्र शचीन्द्र को शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से दिल्ली आ गयी। जहाँ पर पुलिस उन्हें बराबर परेशान करती रही, जिसके बाद ये फिर दिल्ली से लाहौर चली गयी जहाँ पर पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार करके तीन वर्ष तक नजरबंद रखा। फरारी, गिरफ्तारी एवं रिहाई का ये सिलसिला 1931 से 1935 तक चलता रहा। अंत में लाहौर से जिला बदर करने के उपरांत ये उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद शहर में सामान्य जीवन जीते हुए प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी करने लगी। कुछ समय इन्होंने कांग्रेस में भी कार्य किया लेकिन 1937 में इन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया और फिर ये शैक्षणिक क्षेत्र में सक्रिय हो गई, इन्होंने 1939 में मद्रास जाकर मारिया मांटेसरी से मांटेसरी पद्धति का प्रशिक्षण लिया तथा 1940 मे लखनऊ में कैंट रोड के एक निजी मकान में सिर्फ पाँच बच्चों के साथ मांटेसरी स्कूल खोला जिसका मुख्य उद्देश्य प्रारम्भ से ही बच्चों को क्रांतिकारी बनने के लिये प्रेरित करना था। इनका लखनऊ में खोला गया स्कूल बाद में एक बड़े विद्यालय में परिवर्तित हो गया। 14 अक्टूबर 1999 को 92 वर्ष की आयु में गाजियाबाद में अपने पुत्र शचीन्द्र के यहाँ गुमनाम जिन्दगी जीते हुये उन्होंने अंतिम साँस ली।

दुर्गा भाभी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अविस्मरणीय योगदान है। उनका साहसी जीवन यह साबित करता है कि भारतीय नारी जब हिम्मत दिखाती है तो शक्तिशाली साम्राज्यों को भी हिला देती है।

सन्दर्भ

1. सुषमा शर्मा, दुर्गा भाभी, बुक्स क्लीनिक, 2021
2. चिरंजीलाल पाराशर, देवर–भाभी, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली, पटना
3. वीरेन्द्र सिन्धु, भारतीय संस्कृति के अग्रदूत अमर शहीद भगत सिंह, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
4. डॉ0 लोकेश कुमार शरण, महान क्रांतिकारी दुर्गा भाभी
5. Kammaclean, A Revolutionary History of Inter War India : Violence, Image, Voice and Text, C. Hurst & Co. Publishers Ltd., 2015
6. Walwinder Jit Singh Waraich, A Biography of Bhagwati Charan Vohra and Durga Bhabhi, Unistar Books, 2021